परे वाली कॉलोनी कुछ दिन पहले सील हो गई ।।
और तब से आस पड़ोस के लोगों की ज़िंदगी तब्दील हो गयी।
आज हम डरे हुए हैं,
जीवित हैं पर ज़िंदा लाश बने हुए हैं।

आज लगता है काश कर दें सब कुछ ठीक,
इस दुनिया को करके रीवाइंड।।
(बट बीलीव मी दिस इस नथिंग बट द कलैक्टिव करमा ऑफ मैंनकाईंड।)

जिंदा रहने के लिए फ़ासले ज़रूरी हैं,
खुदा जाने अब क्या क्या जरुरी है।
कुछ तो नशा है इन हवाओं में,
यूहीं नहीं पंछी मदहोश होकर घूम रहा इस मस्त गगन में।

कोरोना के भय से,
लाचारी सी छाई है सब के चेहरों पे।
ना जाने कब वो घड़ी आयेगी ,
आज़ाद पंछी की तरह भ्रमण करेगें हम भी।

मिल रहा मौका पृथ्वी को उभरने का,
अपने घावों पर मरहम लगाने का।
शुद्धिकरण हो रहा पर्यावरण का,
आखिर यही तो था विधि के विधान में लिखा।

सलाम है उन्हें जो इस मुश्किल घड़ी में साथ दे रहे हमारा,
देश के प्रधानमंत्री से लेकर डाक्टर ,नर्स , पुलिस ko तह दिल से शुक्रिया है हमारा।

कोरोना जैसे शत्रु से जंग जीतनी है हमें।
सहयोग करना है हमें।।
घर पे रहना है हमें।।

प्रस्तुतकर्ता - हर्षवर्धन तिवारी
V-2019-03-015
BVSc(1st year)